International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-6 Nov-Dec- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

"वैष्विक मंदी एवं भारतीय अर्थव्यवस्था पर उसका प्रभाव"

डॉ. एस. के. गोभिल
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार एवं सहयोग के लिए जुलाई 1944 में ब्रेटन वुडस में यह तय हुआ कि तीन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ स्थापित की जाए जिनमें– विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन। विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना 27 दिसम्बर 1945 को किया गया किन्तु अमरीका की सीनेट के विरोध के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन की स्थापना नहीं हो सकी। बाद में 23 राष्ट्रों ने (भारत सहित) एक समझौते पर हस्ताक्षर कर सीमा शुल्क और व्यापार पर सामान्य समझौते (GATT) की स्थापना की इसका उद्देश्य स्वतंत्र व्यापार को बढ़ावा देना था। गैर (GATT) से विकसित देश ज्यादा लाभान्वित हुए तथा अर्द्धविकसित देशों को इससे अधिक निराशा हुई जिससे अनुभव किया गया कि अर्द्धविकसित देशों के व्यापार घाटे को दूर करने के लिये तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सहयोग के लिये किसी अन्य संस्था की स्थापना किया जाये। परिणाम स्वरूप 1964 में अंकटाड (UNCTAD) की स्थापना किया गया। अंकटाड ;न्डब्ब्।क्द्ध की स्थापना किया गया। अंकटाड (व्यापार और विकास के लिये संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में पूरे विश्व के विकसित एवं अर्द्धविकसित देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देना तथा उसे और अधिक गतिशील बनाना था। व्यापार एवं आर्थिक विकास से संबंधित सभी समस्याओं को सुलझाना, सदस्यों देशों के बीच समन्वय स्थापित करना तथा नीतियों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करना था।

अंकटाड व गैर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित समस्याओं का समाधान करने में असफल रहे। अतः 12 दिसम्बर 1995 को GATT (गैर) को समाप्त करते हुये उसके स्थान पर विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना की गई। विश्व व्यापार संगठन को काफी शक्तिशाली बनाया गया, शुरूआत में ही भारत सहित 153 देश इसके सदस्य थे, इसका प्रमुख उद्देश्य– वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं व्यापार को बढ़ावा देना, प्रभावपूर्ण एवं रोजगार में व्यापक वृद्धि करना, संसाधनों का अनुकूलन प्रयोग करना, चिरंजीव तथा सतत् विकास को स्वीकार करना, लोगों की जीवन स्तर में वृद्धि करना तथा पर्यावरण का संरक्षण एवं सुरक्षा करना रहा है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) के समझौते के अनुरूप भारत ने देश के आयातों पर से मात्रात्मक प्रतिबंध को समाप्त किया। वर्ष 1995 में भारत विश्व व्यापार संगठन में शामिल होने के उपरांत भारत द्वारा भूमण्डीयकरण की नीतियों का अनुपालन करने के परिणाम स्वरूप नियमित में आशानीत वृद्धि दर्ज की गई। विश्व व्यापार संगठन के नीतियों के पालन में घाटे में चल रहे ईकाईयों का निजीकरण करने का निर्णय लिया तथा स्वतंत्र व्यापार के विस्तार में आयात संबंधी प्रशुल्क को उदार बनाया गया। निर्यात संबंधी हेतु अनेक रियायते दी गई।

वैश्वीकरण के पश्चात् दुनिया के प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था वैश्विक बाजारों के संपर्क में है। विश्व के बाजारों के प्रत्येक उतार–चढ़ाव का प्रभाव सदस्य देशों पर पड़ता है। विश्व व्यापार संगठन के सदस्य देश भारत व्यापार में काफी विस्तार हुआ 1995 में मिलियन अमेरिका डालर से शुरूआत व्यापार आज 2017 में अमरिकन ट्रिलियन डालर पर पहुंच गया। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के सर्वे के अनुसार भारत विश्व की उभरती अर्थ व्यवस्था में से एक है, भारत को बेहतर आर्थिक विकास हो रहा है। विश्व बैंक 2017 की रैंकिंग में भारत की अर्थव्यवस्था का आकार 2.65 ट्रिलियन डालर था। जिससे विश्व की पांचवी रैंक में अपना स्थान हासिल किया जबकि 2018 के सर्वे में फिसल यह सातवें रैंकिग में चला गया। वैश्विक रैंकिग 2018 के अनुसार अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस के बाद 2.73 ट्रिलियन डालर के साथ भारत का रैंकिंग सातवें स्थान पर चला गया है। इसका प्रमुख कारण अमेरिकन डालर की तुलना भारतीय रूपये के मूल्य में

लगातार गिरावट प्रमुख कारण रही है तथा अन्य कारणों में विश्वव्यापारी मंदी का असर भारत में भी पड़ने लगा है। भारत के सफल घरेलू उत्पाद (GDP) पर भी मंदी का प्रभाव पड़ने लगा है। वर्ष 2019 के अंतिम तिमाही में GDP में अत्यधिक गिरावट दर्ज की गई है। जिसका प्रमुख कारण– निवेश में कम वृद्धि तथा खपत में भी अत्यधिक कमी होना बताया गया। आटोमोबाइल सेक्टर में मंदी जबकि इस क्षेत्र से 7 प्रतिशत GDP में योगदान रहता था कृषि क्षेत्र में भी GDP का 15 प्रतिशत योगदान रहता था जो कि लक्ष्य से कम रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का पिछड़ना निश्चित ही चिन्ताजनक है। विश्वव्यापी मंदी के कारण भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) बुरी तरह प्रभावित हुई है। जीडीपी के गिरने के प्रमुख कारणों में डॉलर की तुलना में भारतीय रूपये की मूल्य में लगातार गिरावट, वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि जलवायु परिवर्तन, भारत–चाइना ट्रेडवार, पेट्रोलिय पदार्थो की मूल्य में वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र की आय में कमी, राजकोषिय धारा में अत्यधिक वृद्धि, आयातों में वृद्धि नियति में कमी, नए निवेश मे कभी, विनिर्माण क्षेत्र की धीमी प्रगति, कृषि क्षेत्र में कमजोर उत्पादकता, आटोमोबाईल क्षेत्र में मंदी, अवमूल्य (विमुद्रीकरण) का नाकारात्मक प्रभाव तथा जीएसटी (वस्तुसेवाकर) में उत्पन्न समस्या ही प्रमुख रूप से जिम्मेदार है।

वैश्विक मंदी के दुष्प्रभावों में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट (GDP) रोजगार में कभी वस्तु के मूल्यों में वृद्धि, रियल स्टेट का खस्ता हाल तथा बैंको की रियति भी गम्भीर होती जा रही है। कृषि के योगदान भी कम आंकी जा रही है। अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध के कारण निवेशकों के व्यापार के प्रति विश्वास में कमी आयी है। पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य में वृद्धि के कारण अन्य वस्तुओं के मूल्य में भी वृद्धि हुई है। इससे वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग पर बुरा असर पड़ा है।

अतः भारत को वैश्विक मंदी की घरेलू उत्पाद (GDP) बढ़ाने की दिशा में बड़े बदलाव की आवश्यकता है। जिसमें कार्पोरेट क्षेत्र को रियायत देने के लिये कार्पोरेट कर में कमी की जाये, उत्पाद खपत बढ़ाने के लिये आय कर में कमी की जावे, सरका को नौकरी सुरक्षित रखने का भरोसा देना होगा, रोजगार के नए तथा बेहर अवसर उपलब्ध कराना होगा, अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध को खत्म करना होगा। नए निवेशकों को आकर्षिक एवं प्रोत्सहित करना होगा, ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत, दोयेक विकास को प्राथमिकता देना तथा ग्रामीण आय में वृद्धि करना, शिक्षा व स्वास्थ्य में निवेश की आवश्यकता है, परिवन, कृषि व उर्जा में पर्याप्त सरकारी निवेश की आवश्यकता, गरीबी उन्मूलन की दिशा में ठोस उपाय, पर्यावरण संरक्षण तथा टिकाउ विकास पर जोर देने की आवश्यकता है, आय की असंमानता को कम करना, मंहगाई पर नियंत्रण हो, जीएसटी में असंतोष कम कर जीएसटी संग्रह में कसावट लाना, ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा जैसे कार्यो के लिये बजट में वृद्धि करना, रियल एस्टेट की खस्ता हाल सुधारने की दिशा में अतिरिक्त बजट का प्रावधान हो, बैंको के दशा में सुधार के लिये बजट का प्रावधान हो कच्चे तेल के मूल्यों में नियंत्रण हो, सरकारी अपव्यय को रोकना, नए निवेश तथा नौकरी का अवसर पैदा करना,

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत में नवीन आर्थिक सुधारों के पश्चात् निश्चित रूप से बहुत तेज आर्थिक प्रगति की है तथा भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर कर आया है। विश्व व्यापी मंदी की मार अब भारत में पड़ने लगी जिससे भारत सरकार को अति संवेदनशील तरीके से सतर्क होकर मंदी की असर को अप्रभावित करना होगा।

भारत में मंदी के कारण निम्नलिखित है–

01. डॉलर की तुलना में भारतीय रूपये की मूल्य में लगातार गिरावट।
02. वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि।
03. राजकोषीय घाटा में अत्यधिक वृद्धि।
04. आयातों में वृद्धि तथा निर्यात में कमी।
05. नए निवेश में कमी।
06. कृषि क्षेत्र में कमजोर उत्पादकता।

07. ऑटो–मोबाईल क्षेत्र में मंदी।
08. विमुद्रीकरण (अवमूलयन) का नकारात्मक प्रभाव।
09. वस्तु सेवा कर (जीएसटी) में उत्पन्न समस्या।
10. ग्रामीण क्षेत्रों की आय में कमी।
11. पेट्रोलियम पदार्थों की मूल्य में वृद्धि।
12. जलवायु परिवर्तन
13. अमेरिका–चाईना ट्रेडवार।

वैश्विक मंदी का भारत में प्रभाव निम्नलिखित है–

01. भारत के सकल घरेलू उत्पाद ;ळक्च्द्ध में गिरावट।
02. रियल–स्टेट का खस्ता हाल।
03. समस्त औद्योगिक उत्पादन में गिरावट।
04. कृषि की उत्पादकता में गिरावट।
05. निवेशकों के व्यापार व निवेश के प्रति अविश्वास।
06. पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि के कारण अन्य वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हुई है।
07. वस्तुओं एवं सेवाओं के मांग पर बुरा प्रभाव।
08. नौकरी में छटनी तथा रोजगार के अवसर कम होना।

भारत को वैश्विक मंदी से उबरने के लिये निम्न उपायों को अपनाने की जरूरत है–

01. भारत में सकल घरेलू उत्पाद ;ळक्च्द्ध को बढ़ाने की दिशा में बड़े बदलाव की आवश्यकता है।
02. कार्पोरेट क्षे को रियायत देने के लिये कार्पोरेट कर में कमी की जाये।
03. उत्पादन खपत बढ़ाने के लिये आय कर में रियायत देने की जरूरत है।
04. सरकार को नौकरी सुरक्षित रखने का भरोसा देना होगा।
05. अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध को खत्म करना होगा।
06. रोजगार के नए तथा बेहतर अवसर उपलब्ध कराना होगा।
07. नए निवेशक्षों को आकर्षित एवं प्रोत्साहित करना होगा।
08. ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत ढाये के विकास को प्राथमिकता देना होगा तथा ग्रामीण आय में वृद्धि करना।
09. शिक्षा एवं स्वास्थ्य में निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
10. परिवहन, कृषि व उर्जा में पर्याप्त सरकारी निवेश की आवश्यकता है।
11. समाज में आय की असमानता को कम करना।
12. वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य वृद्धि पर निवेश हो।
13 जीएसटी (वस्तु सेवाकर) में असंतोष दूर करना व जीएसटी के संग्रह में कसावट लाना।
14. ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा जैसे कार्यो के लिए बजट में वृद्धि करना होगा।
15. रियल–स्टेट की खस्ता हाल सुधारने की दिशा में अतिरिक्त बजट का प्रावधान हो।
16. बैंको की दशा में सुधार हेतु बजट का प्रावधान हो।
17. कच्चे तेल की मूल्य को नियंत्रित करने की आवश्यक है तथा इसके खपत मितव्ययिता पूर्ण हो।
18. सरकारी अपव्यय पर नियंत्रण्ध लाना होगा।
19. नए निवेश तथा रोजगार के अवसर पैदा करने की आवश्यकता है।

निष्कर्षः–

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (2017) के सर्वे के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्र के रूप में उभरा है। भारत में नवीन आर्थिक सुधारों के पश्चात् निश्चित रूप से तीव्रगति से आर्थिक

प्रगति की है और भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरकर आया है। विश्वव्यापी मंदी की मार से भारत भी अहूता नहीं रहा। विश्वव्यापी मंदी के कारण भारत की सकल घरेलू उत्पादन (GDP) में लगातार गिरावट जारी है। हाल के वर्षो में निवेशकों का भारत के प्रति अविश्वास उत्पन्न हुई। वर्तमान केन्द्र सरकार 2019 में जीडीपी 4.2 प्रतिशत रही जबकि 2020–21 में जीडीपी 7.7 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान भारत को 05 लाख करोड़ डॉलर (05 ट्रिलियन डॉलर) की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया था ये अब थोड़ा मुश्किल लग रहा है। फिलहाल भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 29 ट्रिलियन डॉलर है। 01 MF (अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष) में 2021 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 11.5 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया जबकि भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार के. व्ही सुब्रमण्यम के मुताबिक भारत की आर्थिक वृद्धिदर 11 प्रतिशत के करीब होगा। कार और बाईक की ब्रिकी में 31 प्रतिशत गिरावट आई है। इसके चलते आटो सेक्टर में 3 –1/2 लाख से ज्यादा कर्मचारियों की नौकरी चली गई तथा 10 लाख लोगों की नौकरी खतरे में हैं। कपड़ा उद्योग की भी हालत खराब है।

भारत की आर्थिक वृद्धि दर 2018 और 2019 में 7.5 प्रतिशत रह सकती है। तेल की उंची कीमत जरूर चुनौती है लेकिन भारत ऐसे बाहरी दबाव से पार पाने में काफी हद तक सक्षम है। भारत में निवेश और उपभोग दोनो की बदौलत + अर्थव्यवस्था में सुधार हो रहा है। लेकिन तेल की बढ़ी कीमते और मुश्किल वित्तीय स्थितियों से इस पर दबाव पड़ेगा।

वित्सवर्ष 2018–19 में निर्यात में 9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। वैश्विक मंदी के रूप में आई बड़ी गिरावट के बावजूद व्यापारिक निर्यात 2018–19 में 337 अरब डॉलर दर्ज किया गया जो कि वर्ष 2013–14 के 314.4 अरब डॉलर के स्तर से आगे बड़ गया यह उपलब्धि चुनौतिपूर्ण वैश्विक माहौल में हासिल की गई है।

भारत के जीडीपी की ग्रोथ वर्ष 2017 में 07 फीसदी थी जो वर्ष 2018 में घटकर 6.1 फीसटी रह गई है। वर्डबैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस साल विकसित देशों की अर्थव्यवस्था 7 फीसदी घट जाएगी और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में भी 2.5 फीसदी की गिरावट आ सकती है।

संदर्भ सूचीः–

01. वाजपेयी एन. एण्ड एन. दास गुप्ता (2003) मल्टीनेशनल कम्पनी एण्ड फारेन डायरेक्ट इन्वेस्टेमेन्ट इन इण्डिया एण्ड चायना।
02. इकानामिक्ससर्वे 2018–19 गण्दर्नमेन्ट ऑफ इंडिया 2018–19 Central Government in India
03. भारतीय अर्थव्यवस्था, डॉ. चतुर्भुज मामोरिया एवं डॉ. एस. सी. जैन साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा (2018)
04. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वितः– डॉ. जे. पी. मिश्रा साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आंगरा (2017)